ISSN 2349-638x
Impact Factor 4.574

"Education through self-help is our motto"-Karmaveer

Rayat Shikshan Sanstha's,

Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur-Perid
Tal- Shahuwadi, Dist-Kolhapur- 415101

(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)

NAAC Reaccredited-'B'Grade (with CGPA-2.82)

A Special issue of

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal

Special Issue- XXV ISSN –2349-638x
Impact Factor 4.574
www.aiirjournal.com

Editors
Dr.Anil Ubale Dr.Sidram Khot

Special issue No.25 Published by
Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
UGC Approved Sr.No.64259 Impact Factor 4.574
website :- aiirjournal.com | email : aiirjpramod@gmail.com
Chief Editor : Pramod P. Tandale
Mob.No.9922455749

Organised By	Rayat Shikshan Sanstha's Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur (Perid)	ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

Sr. No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
1.	डॉ.नारायण विष्णु केसरकर	वैश्वीकरण की मजबूरी और हिंदी कहानी (राजीव शर्मा के 'खाली कोना' कहानी संग्रह के संदर्भ में)	1 To 3
2.	प्रा. मारूफ मुजावर	मध्यकालीन संत साहित्य में वैश्वीकरण	4 To 6
3.	प्रा. डॉ. के. बी. भोसले	वैश्वीकरण और हिंदी कहानी (निर्मल वर्मा की कहानियों के संदर्भ में)	7 To 8
4.	डॉ. संजय चिंदगे	वैश्वीकरण से प्रभावित २१ वी सदी के हिंदी उपन्यास	9 To 10
5.	डॉ. एस. के. खोत	वैश्वीकरण - बाजारीकरण और मीडिया	11 To 12
6.	डॉ. नाजिम शेख	नयी हिंदी कविता और भूमण्डलीकरण	13 To 15
7.	डॉ. संजय चोपडे	आधुनिक हिंदी उपन्यासो में नारी के बदलते रूप (छिन्नमस्ता, अकेला पलाश, जहरबाद, भैरवी, मुझे चाँद चाहिए, ऑवा के संदर्भ में)	16 To 19
8.	डॉ. दीपक रामा तुपे	वैश्वीकरण की भाषा हिंदी	20 To 22
9.	डॉ. भास्कर उमराव भवर	'डूब' उपन्यास : में सामाजिक विमर्श	23 To 25
10.	प्रा.संगीता विष्णु भोसले	वैश्वीकरण की समस्याएँ - 'दौड' उपन्यास के संदर्भ में	26 To 29
11.	प्रा.बाबासाहेब तुकाराम साबले महेश संदिपान गोतसुर्वे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में निर्मल वर्मा का कथा साहित्य	30 To 32
12.	प्रा. डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत	'कायास्पर्श' उपन्यास में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण	33 To 36
13.	प्रा. अश्विनी महादेव जाधव	वैश्वीकरण और हिंदी कविता	37 To 39
14.	प्रा. शैलजा टिळे	भूमंडलीकरण के दौर में समकालीन हिंदी कविता	40 To 43
15.	सुश्री. छाया शंकर माळी	वैश्वीकरण और हिंदी भाषा	44 To 44
16.	प्रा. शिवराज शिंदे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी	45 To 46
17.	प्रा.डॉ. अनिल प्रभाकर उबाळे	जागतिकीकरण आणि ग्रामीण साहित्य	47 To 50
18.	कु.मिनाक्षी मधुकर मुसळे डॉ.ए.डी.खोब्रागडे	इंटरनेटच्या युगात दिल्या जाणा या प्रचलित जागरूकता सेवा	51 To 54
19.	प्रा. कल्पना तबाजी रोकडे	अरूण काळे यांची कविता आणि जागतिकीकरण	55 To 57
20.	कु.श्रध्दा दत्तात्रय कदम डॉ.पी.वी.गेडाम	E-Learning Courses in India	58 To 62
21.	प्रा. डॉ. मानसी दशरथ जगदाळे	जागतिकीकरण आणि ग्रामीण साहित्य	63 To 66
22.	सौ. आशा चंद्रशोज जिरगे	भारतातील ग्रंथालय व माहितीशास्त्र शिक्षण	67 To 70

Scanned by CamScanner

Interdisciplinary National Level Conference 17 th Mar.2018
Special Issue On Impact of Globalization on Language, Literature, Education, Social Sciences, Library, Environment, Sports And Games

Organised By	Rayat Shikshan Sanstha's Prof.Dr.N.D.Patil Mahavidyalaya,Malkapur(Perid)	ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

वैश्वीकरण की भाषा हिंदी

डॉ. दीपक रामा तुपे
स्नातक तथा स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
दत्ताजीराव कदम आर्टस्, साइंस एंड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

भूमंडल हिंदी का पुराना शब्द है। अंग्रेजी के 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द का हिंदी अनुवाद 'भूमंडलीकरण' शब्द कुछ ही साल पहले प्रचलन में आया। आज ग्लोबल होती हिंदी की चर्चा सर्वदूर हो रही है, जो किताबी भाषा से बाहर निकलकर आम बोलचाल का रूप ग्रहण कर चुकी है। स्थानीय, क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं को वैश्विक पटल पर प्रस्तुत करने की प्रकिया है–वैश्वीकरण। वैश्वीकरण का प्रभाव आज आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, राजनीति, बाजार, भाषा, लिपि आदि क्षेत्रों में दिखाई देता है। वर्तमान संदर्भ में भूमंडलीकरण का अर्थ व्यापक तौर पर बाजारीकरण, निजीकरण, उदारीकरण, विकेंद्रीकरण है। अमरेश द्विवेदी अपने 'ग्लोबल गांव में हिंदी' आलेख में लिखते हैं– "भूमंडलीकरण की जो सैद्धांतिक है वो एकरूपता के पक्ष में जाती है। वो मानती है कि अगर एक भाषा होगी तो भूमंडलीकरण के विस्तार में मददगार साबित होगी।"[1]

मनुष्य समस्त प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि उसके पास मस्तिष्क है। इस मस्तिष्क में विचारों की प्रकिया होती है। इन विचारों की अभिव्यक्ति के लिए माध्यमों की आवश्यकता होती है। वैसे देखा जाए तो मौन भी मुखर माध्यम होता है, किंतु अभिव्यक्ति के स्तर पर भाषा ही वह माध्यम है, जिससे विचार, भाव और अनुभव मूर्त रूप धारण करते हैं। इतना ही नहीं, भाषा व्यक्ति की पीड़ा, उल्लास और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा वैचारिक और व्यक्ति के मानस पटल पर उद्वेलित भावनाओं का प्रतिबिंब है। आज विश्व में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। शायद सभी भाषाएँ संवेदना के स्तर पर आपसी जुड़ाव रखती है, लेकिन हिंदी भाषा अपनी लचीलेपन और सहजता की वजह से इस संवेदनशीलता के अत्यंत निकट है। हिंदी शब्द भारतीयता और भारत के संबंध का दयोतक था, जो कि अभारतीयों के द्वारा प्रयुक्त किया जाता था; जो लोग भारत में आए हैं वे भारतीय है और उनकी बोली को हिंदवी कहा जाता था। तदोपरांत हिंदवी शब्द हिंदी प्रदेश की बोलियों और उपभाषाओं के लिए प्रयुक्त होने लगा था। हिंदी भाषा का इतिहास हजारों सालों पुराना है। हिंदी भाषा गतिशील नदी की तरह निरंतर कठिनता से सरलता की ओर बहती है। उसकी प्रक्रिया के संदर्भ में साहित्यकार राजेंद्र यादव का कहना है कि–'भाषा कभी बनती, बिगड़ती या बदलती नहीं बल्कि विकसित होती है।'

आज जिस समृद्ध, संपन्न हिंदी का बोलबाला है उसके विकास की अपनी एक कहानी है। शैशवावस्था में हिंदी अपभ्रंश के निकट रही। 1000 से 1100 ई. तक हिंदी का ऐसा ही मिलाजुला रूप रहा। हिंदी का व्याकरण भी अपभ्रंश के अनुरूप था। परिवर्तन के कई पाड़ाव पार कर अवधी और ब्रज के सान्निध्य में रही हिंदी की 1500 ई. तक स्वतंत्र पहचान बन चुकी थी। हिंदी का मध्यकाल (1500–1800) आक्रमणकारियों का काल रहा। इसी कारण हिंदी में विदेशी आक्रमणकारियों की भाषा के शब्द आए। इसमें तुर्की, फारसी शब्दों का समावेश हुआ। व्यापार के कारण देश का संपर्क बढ़ने लगा और पुर्तगाली, स्पेनी, फ्रांसीसी और अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रवेश हिंदी भाषा में हुआ। इस दौरान पिंगल, मैथिली, ब्रजभाषा और खड़ीबोली में भी साहित्य सृजन हुआ। मुगल काल में उर्दू के शब्द हिंदी भाषा में रच–बस गए। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी भाषा वह भाषा है जिसने पराधीनता के काल में आजादी की अलख जगाने अर्थात् सेतु के रूप में कार्य किया। आजादी प्राप्ति के बाद अंग्रेजों की बनी बनाई व्यवस्था में अंग्रेजी की प्रधानता और अभिजात्य वर्ग में अंग्रेजी का बोलबाला होने के कारण 22 बोलियों से युक्त हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

वैश्वीकरण का असर वर्तमान हिंदी साहित्य पर ही नहीं बल्कि हिंदी उपन्यासों पर भी दिखाई देता है। हिंदी उपन्यास के शीर्षक पर भी वैश्वीकरण का असर दिखाई देता है। जैसे–उपन्यास साहित्य–नीत्रेश रघुवंशी का 'एक कस्बे के नोट्स' (2012), शशिकांत मिश्र का 'नॉन रजीडेंट बिहारी' (2015), विनोद भारतद्वाज का 'सेप्पुक' (2015), अलका सरावगी का 'जानकीदास तेजपाल मैनसेन' (2015), सुधीश पचौरी का 'मिसकाऊः एक लव स्टोरी' (2017); नाट्य साहित्य–हेनरिक इब्सन का "मास्टर बिल्डर'; कविता संग्रह–राजकमल चौधरी का 'ऑडिट रिपोर्ट' आदि। इन शीर्षकों पर गौर करने पर पता चलता है कि अंग्रेजी भाषा का प्रभाव हिंदी साहित्य पर दिखाई देता है, जिसके कारण उपन्यास, नाटक एवं कविता संग्रहों के शीर्षक हिंग्रेजी बनते जा रहे हैं। इस संदर्भ में हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका अलका सरावगी के मतानुसार–"यह सच है कि अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। लेकिन साथ ही भाषा के स्तर पर एक नई शब्दावली का भी गठन हो रहा है; जो आज के जीवन यथार्थ को पकड़ने में मददगार हो रही है और इस तरह हिंदी एक समृद्ध भाषा बन रही है।"[2] आज हिंदी मातृभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा, जनभाषा जैसे विभिन्न रूपों में उभर रही हैं। वर्तमान समय में बहुभाषिक देश को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य हिंदी भाषा पूरे सिद्दत के साथ कर रही है।

Scanned by CamScanner

प्रिंट माध्यमों की भाषा जहाँ एक ओर सरल, स्पष्ट, सहज, सूचनात्मक, संप्रेषणीय और मानक नजर आती है तो दूसरी ओर वैश्विक स्तर पर हिंग्लिश बनती हुई दिखाई देती है। चर्चित समाचार पत्र दैनिक 'भास्कर' में प्रकाशित समाचार के शीर्षक यहाँ द्रष्टव्य है–'सीलिंग की धीमी रफ्तार से कमेटी नाराज', 'मेट्रो कमर्शियल और रेजिडेंशिल प्रोजेक्ट अटके', 'नो मेकअप सेल्फीज से भी चलता है कॉन्टिको गर्ल का जादू', 'वेंटिलेशन का अभाव', 'ट्रेन लेट है', 'मोबाइल का बढ़ता क्रेज' आदि। इन शीर्षकों से विदित होता है कि समाचार पत्रों की भाषा में अंग्रेजी का प्रभाव दिखाई देता है। इतना ही नहीं, विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिकी, वार्षिकी, द्वैवार्षिकी, त्रैवार्षिकी, विशेषांक, ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथों की भाषा दिन–ब–दिन बदलती जा रही है। प्रिंट माध्यमों पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव कुछ ज्यादा ही नजर आ रहा है, जिसके कारण इन माध्यमों की भाषा हिंग्लिश बनती जा रही है।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की भाषा पर भी वैश्वीकरण का असर दिखाई देता है। रेडियो, दूरदर्शन और फिल्म की भाषा में परिवर्तन नजर आ रहा है। रेडियो की भाषा इन दिनों संप्रेषणीय, सूचनापरक, जनप्रचलित, सहज, सरल, रोचक, आकर्षक, सुबोध, मुहावरे और कहावतों से युक्त दिखाई देती है। इसके अलावा अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के शब्दों का आगमन भी रेडियो की भाषा में दिखाई देता है। दूरदर्शन एवं विभिन्न चैनोलों की भाषा हिंग्लिश, खिचड़ी, नाटकीय, चित्रात्मक, दृश्यात्मक, आम बोलचाल की, स्पष्ट, सरल, सर्वसहज, आकर्षक, प्रभावी और लोकअभिरुचि के अनुरूप होती है। फिल्मों की भाषा भावपूर्ण बिंबों–प्रतिबिंबों एवं संकेतों की भाषा होती है। ध्वनि के साथ संगीत तथा संकेतों का प्रयोग फिल्मी भाषा में दिखाई देता है। हिंदी फिल्मों की भाषा चित्रात्मक, जनभाषा, स्पष्टता, आवाज में आरोह–अवरोह, स्वरों का उतार–चढ़ाव से युक्त दिखाई देती है। आज फिल्मों में हिंग्लिश शब्दों का प्रयोग अधिकांश मात्रा में नजर आ रहा है। यहाँ हिंदी फिल्मों के शीर्षकों के उदाहरण द्रष्टव्य हैं; जैसे–'स्लमडॉग मिलेनिर', 'टॉयलेट एक प्रेम कहानी', 'मिस्टर इंडिया', 'थ्री इडिट्स', 'सन आ'फ इंडिया', 'गैलबर', 'मदर इंडिया', 'ब्लैक कैट' आदि। ये फिल्म हिंदी तो है, मगर शीर्षक हिंग्रेजी में दिए हुए हैं; जो वर्तमान समय की जनप्रचलित भाषा है। गीतों की भाषा एक ओर मानक तो दूसरी ओर हिंग्लिश नजर आ रही है। जैसे–'वन टू का फोर, फोर टू का वन माय नेम इज लखन. ..', 'विश्वबंधुत्व का नारा है सारे जहाँ के हैं हम, सारा जहाँ हमारा विश्व बंधुत्व का यह है नारा, विश्व है परिवार भारत घर हमारा है। इसमें पहले गीत की भाषा हिंग्रेजी और दूसरे गीत की भाषा मानक एवं जनप्रचलित दिखाई देती है।

वेब माध्यमों अर्थात् अंतरजाल की भाषा समय के साथ कदमताल करती है। हिंदी भाषा का बदलता रूप आज अंतरजाल पर नजर आ रहा है। जालस्थल की भाषा मानक दिखाई देती है; जैसे–'वसुधैव कुटुंबकम्' के संकल्प को आगे बढ़ता भारतः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी', 'वैश्विक व्यापार में भारत का योगदान', 'नैतिक मूल्य मानवता की पहचान होते हैं।' जालस्थल पर प्रकाशित में ये शीर्षक जनप्रचलित खड़ीबोली हिंदी में हैं। जालस्थल की भाषा का बदलता रूप इस प्रकार है–'वॉक पर नेर कैलोरी का भी हिसाब, 'बदला मेंस वॉर्डरोब का अंदाज', 'ई–वे बिल ने पहले ही दिन जाम किए ट्रकों के पहिए'। जालस्थल की भाषा हिंग्लिश बनती जा रही है। सोशल मीडिया पर भी हिंदी का प्रभाव दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। लेकिन वहाँ तो वाक्य हिंदी में पुकारा जाता हैं और लिखा रोमन लिपि में जाता है।

मीडिया और विज्ञापनों में हिंदी भाषा का प्रयोग ज्यादा मात्रा में परिलक्षित हो रहा है। विज्ञापन की भाषा जनप्रचलित, आकर्षक, विश्वसनीय, स्मरणीय, पठनीय, प्रभावोत्पादक, सहज, सरल और बोधगम्य नजर आती है। जैसे–'दिल नहीं, बिल छोटा कीजिए', 'जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी', 'दिल मांगे मोर रे', 'ठंडा मतलब कोका कोला', 'शान की सवारी हीरो होंडा', 'पति घर पर पत्नी छुट्टी पर वाईफ बिना लाइफ', 'प्राकृतिक कोमलता से गोरा बनाए कि सभी देखते रह जाएं', 'कोई भी ब्रांड इतने फीचर्स नहीं दे सकता और वो भी इस अविश्वसनीय कीमत पर' आदि।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भाषा में बदलाव नजर आ रहा है। जैसे एटीएम (स्वंचालित निकासी यंत्र), तकनीकी (प्रौद्योगिकी), इंटरनेट (अंतरजाल), वेबसाइट (जालस्थल), कम्प्यूटर (संगणक), ब्लॉग (चिट्ठा) आदि। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भाषा में अंग्रेजी शब्दों की भरमार नजर आती है। मौखिक भाषा से शुरू हुई परंपरा लिखित से होते हुए फोनेटिक लैंग्वेज तक पहुँच गई है। हाल ही में संगणक कोड मिक्सिंग भाषा भी समजने लगा है अर्थात् संगणक हिंदी और अंग्रेजी दोनों एक साथ लिपिबद्ध करने लगा है। इसमें जबलपुर की छात्रा आयुषी पांडे ने जॉन हॉपस्किंग यूनिवर्सिटी, अमेरिका में "फोनेटिकली बैलेंस्ड कोड मिक्स्ड हिंदी–इंग्लिश रीड स्पीच कोर्पस फॉर ॲटोमेटिक स्पीच रिकगनेशनम" नाम से शोध कार्य किया है; जिसके तहत हिंदी और अंग्रेजी भाषा का उच्चारण एक साथ लिपिबद्ध होगा। वैश्वीकरण के युग में हिंदी जनप्रचलित भाषा होगी।

वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी सॉफ्टवेयर की भाषा बन गई है। देश–विदेश की भाषाओं के तमाम शब्द हिंदी भाषा में घुल–मिल चुके हैं। वे अन्यान्य भाषाओं के होने के बावजूद दूसरी भाषा के नहीं लगते। वैश्वीकरण के कारण हिंदी भाषा गाँव के हाट तक पहुँच चुकी है। फिल्मों के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी का प्रचार–प्रसार देश–विदेश में हो चुका है। डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल ने वर्ष 2012 में किए गए भाषा शोध अनुसंधान रिपोर्ट के तहत आज दुनिया में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी है। चीनी न्यूज एजेंसी

Scanned by CamScanner

सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार केवल 70 फीसदी चीनी ही मदारिन बोलते हैं, जबकि भारत में हिंदी बोलने वालों की संख्या 78 फीसदी है। डॉ. नौटियाल ने लिपि के आधार पर भाषा का अध्ययन किया और हिंदी भाषा की देवनागरी लिपि ने चीनी भाषा की मंदारिन लिपि को पीछे छोड़कर विश्व में अव्वल स्थान पा लिया है।

निष्कर्षत :

कहा जा सकता है कि सूचना प्रौद्योगिकी के कारण विश्व सीमट रहा है, जिसका सीधा असर हमारी भाषा पर हो रहा है। इस दौर में देश बदल रहा है और समय बदल रहा है। ऐसे परिवर्तकारी युग में अगर हिंदी भाषा बदल रही है तो इसमें परेशान होने वाली कोई बात नहीं है, जबकि खुश होना चाहिए। भाषा की फितरत ही है बदल जाना। बदलाव न हो तो पानी भी सडांध मारता है और बदबूदार पानी किसी भी काम का नहीं रहता। इसलिए भाषा को भी जिंदा रहने के लिए समय के साथ बदलना होगा। जब तक भाषा नहीं बदलेगी तब तक विकास असंभव है। विभिन्न भाषा–भाषियों के बीच हिंदी संवाद–सेतु का कार्य करती है। वैश्वीकरण के इस दौर में भारतीय बाजार की ताकत जैसे–जैसे बढ़ेगी वैसे–वैसे हिंदी भाषा की ताकत बढ़ेगी। देश–विदेश की करोड़ों जनता तक हिंदी भाषा ने अपनी पहुँच बनाई हैं क्योंकि हिंदी सूचनापरक एवं संप्रेषणीय भाषा है। रही बात हिंदी भाषा के हिंग्लिश रूप की, इसमें ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ के साथ–साथ उच्चारण, वर्तनी, लिपि एवं व्याकरण का मानकीकरण होगा तो आने वाले समय में यह समस्या भी हल होगी; इसमें कोई संदेह नहीं।

संदर्भ संकेत:

1. https://www.bbc.com/hindi/india/2012/09/120912_globalisation_hindi_akd&hl=en-IN
2. https://www.bbc.com/hindi/india/2012/09/120912_globalisation_hindi_akd&hl=en-IN

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638x
www.aiirjournal.com

Scanned by CamScanner